इकाई 8 रचना (कंपोजीशन) की तैयारी

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य
8.1 प्रस्तावना
8.2 रचना का अध्ययन (नमूना)
8.3 रचना के प्रकार
  8.3.1 वर्णनात्मक लेखन
  8.3.2 आख्यानपरक लेखन
  8.3.3 तार्किक लेखन
8.4 रचना की तैयारी
  8.4.1 विषय क्या है?
  8.4.2 विषय का सीमा निर्धारण
  8.4.3 विषय से संबद्ध सामग्री एकत्र करना
  8.4.4 विषय की रूपरेखा बनाना
8.5 रचना करते समय ध्यान देने योग्य बातें
  8.5.1 रचना का प्रारंभ
  8.5.2 विषय का विस्तार
  8.5.3 रचना का अंत
8.6 सारांश
8.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.0 उद्देश्य

रचना करते से पहले विषय सामग्री एकत्रित करने से लेकर लेखन करते समय जिन बिन्दुओं एवं पक्षों का ध्यान रखा जाता है उनका विस्तृत विवेचन इस इकाई में किया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- रचना के प्रकारों से परिचित हो सकेंगे,
- रचना के लेखन की तैयारी करते समय उससे संबद्ध विशेष बिन्दुओं की चर्चा कर सकेंगे; और
- रचना करते समय जिन बातों पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है उनका विवेचन कर सकेंगे।

8.1 प्रस्तावना

इकाई 7 में आपने प्रभावी लेखन के संबंध में जानकारी प्राप्त की। जिस रचना को पढ़ने के बाद पाठक पर अपेक्षित प्रभाव पड़े तथा वह जीवन एवं समस्याओं को एक नयी दृष्टि से देखने को बाध्य हो जाए वह लेखन प्रभावी कहलाता है। किसी भी रचना या लेखन को प्रभावी बनाने के लिए रचनाकार को जिन बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है उसकी चर्चा हम इस इकाई में करेंगे।

वस्तुतः रचना या कम्पोज़ीशन वह होती है जिसमें एक ढाँचे के अंतर्गत प्रारंभ से अंत तक विषय का सुसंगठित प्रस्तुतीकरण होता है। यह एक विषय के किसी एक बिन्दु से प्रारंभ होती है और फिर एक बंधे सुसंगठित तरीके से आगे बढ़ती है। विषय का प्रारंभ, विस्तार और अंत बहुत ही सुनियोजित होता है। रचना कोई भी हो सकती है। कविता, संगीत का कोई एक अंश, चित्रकारी, मूर्तिकला आदि भी रचना ही है। इस इकाई में हम रचना के जिस रूप की चर्चा करेंगे वह रचना के लेखन पक्ष से संबंधित है। रचनाकार किसी भी रूप में रचना कर सकता है और अपनी कल्पना और सुनियोजन से उसे एक विशिष्ट रूप दे सकता है।

आपने भी कभी न कभी रचना अवश्य की होगी, जिसमें अपने विचारों का समावेश किया होगा। विद्यालय में आपने अनेक निबंध भी लिखे होंगे यह भी रचना या कम्पोज़ीशन का एक प्रकार है। निबंध का एक विशिष्ट आकार होता है जिसमें विषय वस्तु का विस्तार किया जाता है। वास्तव में किसी भी रचनाकार को अपने विषय के स्पष्ट और सुनियोंजित प्रस्तुतीकरण के लिए उसका अपने विषय पर पूर्ण नियन्त्रण और सही सामग्री का चयन अत्यंत आवश्यक है। यह भी जरूरी है कि रचना का प्रारंभ करने से पहले वह उसका एक संगठित खाका पहले से तैयार कर ले।

विषय-वस्तु के अनुसार रचना का विस्तार अपने आप ही प्रथम अनुच्छेद के बाद होता चलता है। पहला अनुच्छेद उसके विषय का प्रारंभ होता है। उसके बाद रचना अपने आप आगे बढ़ती है। कई बार जब आप एक अनुच्छेद लिखने बैठते हैं तो उस अनुच्छेद के समाप्त होने के बाद आपको ऐसा लगता है कि आपको और भी बहुत कुछ कहना है, विषय के बारे में और भी विस्तार से उदाहरण देते हुए बताना है और यहीं से किसी रचना की शुरुआत होती है। अर्थात् कई बार किसी विषय विशेष पर चर्चा करने के लिए केवल एक ही अनुच्छेद उपयुक्त नहीं होता। कम्पोजीशन किसी अनुच्छेद से कहीं अधिक बड़ी और विस्तृत इकाई है। इसमें कई अनुच्छेद हो सकते हैं। इसमें विचारों की शृंखला होती है और उनमें तारतम्य होता है।

इस इकाई में हम उन प्रमुख पक्षों पर चर्चा करेंगे जिन्हें किसी रचना का प्रारम्भ करने से पहले, रचना करते समय और उसका समापन करते समय ध्यान रखना आवश्यक है। कुछ ऐसी कठिनाइयाँ जो रचना करते समय लेखक के सामने आती है, उनका किस प्रकार निवारण किया जाए, उसके लिए भी सुझाव देने का प्रयत्न करेंगे। इकाई के प्रारंभ में हम रचना का नमूना प्रस्तुत करेंगे और रचना के लेखन से संबंधित बिन्दुओं की चर्चा करते समय इसी रचना के अंशों को उदाहरण के रूप में बताएंगे।

8.2 रचना का अध्ययन (नमूना)

प्रदूषण : एक समस्या

वातावरण एवं वायु-मंडल का दूषित होना प्रदूषण कहलाता है। प्रदूषण की समस्या सम्पूर्ण विश्व में बड़ी ही तीव्रता से अपना प्रभाव जमाती जा रही है। आज समस्त मानव जाति इस समस्या से आतंकित है, और विश्व का प्रत्येक देश अपने-अपने ढंग से इस समस्या के सम्यक् समाधान में संलग्न है। प्रदूषण एक ऐसी विकट समस्या है, जिसका समुचित समाधान नहीं हो पा रहा है। वैज्ञानिकों का मत है कि समय रहते यदि तत्काल फैल रहे इस प्रदूषण को सही ढंग से नियंत्रित नहीं किया गया तो आगामी दशकों में सम्पूर्ण धरती किसी भी जीवधारी के रहने योग्य नहीं रहेगी। प्रदूषण का प्रभाव वनस्पतियों पर भी होगा और यह शस्यश्यामला धरती विकृत वनस्पतियों के कारण अपनी सम्पूर्ण सुन्दरता एवं उपादेयता खो देगी।

प्रदूषण विभिन्न प्रकार से हमें प्रभावित कर रहा है। उनमें प्रमुख है - जल-प्रदूषण। नदियों, नहरों, तालाबों या पानी के अन्य स्रोतों जहाँ से मानव पेय जल प्राप्त करता है। सागर या महासागरों का तटीय भाग जहाँ से खाद्य सामग्री जैसे-मत्स्य आदि प्राप्त होती है, सभी चीज़ें प्रदूषित हो जाएंगी। पेय जल के प्रदूषण की समस्या आज हमारे सामने एक चुनौती है जिसका सामना हमें करना है।

वायु-प्रदूषण की समस्या इतनी जटिल होती जा रही है कि वैज्ञानिकों के अथक प्रयास के बावजूद भी इस पर नियंत्रण पाना असंभव सा ही प्रतीत हो रहा है। वायु में मिली जहरीली गैस, धूल, धुआँ से सुन्दर, कलात्मक एवं ऐतिहासिक महत्व के प्राचीन एवं नवीन भवन धीरे-धीरे अपनी सुन्दरता खोते जा रहे हैं। यह विष इतनी धीमी गति से हमारे जीवन में घुलता जा रहा है कि इसके दुष्परिणाम तत्काल तो नहीं दिखाई दे रहे हैं पर भविष्य में इनके कुप्रभाव से बचना कठिन हो जाएगा।

जब हम प्रदूषण के कारणों पर दृष्टि डालते हैं, तो कई तथ्य स्पष्ट रूप से सामने आते है जिन्हें हम प्रदूषण के कारण कह सकते हैं। दिनों दिन बढ़ती औद्योगीकरण की प्रवृत्ति तथा तरह-तरह के आणविक परीक्षण पर्यावरण की विकृति के प्रमुख कारण है। बड़े-बड़े कारखाने, फैक्टरियाँ, तथा उनकी धुआँ उगलती बड़ी-बड़ी चिमनियाँ सम्पूर्ण वायुमंडल में व्याप्त प्राण-पोषक तत्वों की क्षति कर, विनाशक तथा विषैला तत्व घोलती जा रही हैं। कारखानों में प्रयुक्त जल अनेकों रासायनिक तत्वों से भरा होता है जो नदियों में मिलकर पेय जल के पोषक तत्वों का विनाश कर रहा है। दिन-रात सड़क पर दौड़ती बसें, कारें, ट्रकें तथा पेट्रोल और डीज़ल से चलने वाली अन्य मशीनों तथा वाहनों से निकला हुआ धुआँ तथा जहरीली गैसों का प्रभाव अत्यन्त व्यापक है जिनसे बचना आज संभव नहीं है।

अनेक प्रकार के आणविक परीक्षण चाहे वे समुद्र में हों या धरती पर, अपना अलग प्रभाव डाल रहे हैं। इन परीक्षणों से अनेक नवीन बीमारियों का जन्म हो रहा है जिनसे सारा विश्व आतंकित है। इनका परिणाम बड़ा ही भयानक है।

ध्वनि प्रदूषण का परिणाम बड़ा ही घातक होता है। मानव मात्र में बढ़ता हुआ बहरापन इसी की देन है, जिससे सारा सभ्य समाज चिंतित है और उसके समाधान में लगा हुआ है।

प्रदूषण के अन्य कई कारण भी हैं। अबाध गति से बढ़ती हुई जनसंख्या जिससे पृथ्वी का प्रत्येक कोना भरता जा रहा है। खेतों, पेड़ों का निरन्तर और बेरोक-टोक कटाव के कारण हरियाली का अभाव और रेगिस्तानों का बढ़ना प्रदूषण की समस्या वृद्धि में अपना योग दे रहे हैं। वृक्ष हमारे सबसे कल्याण-कारी

एवं शुभचिन्तक मित्र हैं, यह हम भूल गए हैं और क्षणिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए, अपनी भौतिक भूख के शमन के लिए उन्हें बेदर्दी से काटते जा रहे हैं जिससे प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है।

प्रदूषण पर नियंत्रत सभी चाहते हैं। इसी से वैज्ञानिकों ने कई ऐसे उपकरण तैयार किए हैं जिनके प्रयोग से बड़े-बड़े कारखानों और फैक्टरियों में उनके उपयोग से कुछ सीमा तक प्रदूषण को नियंत्रण में लाया जा रहा है। कारखानों तथा फैक्टरियों से निकलने वाले दूषित जल को नदियों या अन्यत्र खुले स्थानों पर न डालकर भूगर्भ में डाला जाए। कारखानों के मलवे को जलाकर या अन्य प्रकार से नष्ट कर उनके मारक प्रभाव से बचा जा सकता है। कारखानों से निरन्तर निकलने वाला धुआँ बस्तियों पर प्रभाव न डाल सके इसके लिए बास्तियाँ उनसे दूर बसाई जा सकती हैं। वृक्षों तथा वनों का कटाव रोककर बहुत कुछ प्रदूषण रोका जा रहा है। प्राकृतिक संतुलन बनाये रखने के लिए वनों तथा वृक्षों से हरी-भरी धरती का होना नितान्त आवश्यक है इस तथ्य को आज सारा देश समझने लगा है और वृक्षारोपण तथा हरित पट्टियों के निर्माण में अधिक धन लगाया जा रहा है।

जहाँ तक संभव हो प्रदूषण की विकट समस्या पर शीघ्र ही काबू पाना है। इसमें किसी भी प्रकार की देर हमारी विकसित और विकासशील सभ्यता एवं संस्कृति के लिए घातक हो सकता है। प्रदूषण के विनाश से बचने के लिए जितनी सावधानी हो सकती है, जितने संभव उपाय हो सकते हैं उनका पालन मानव मात्र का प्रथम कर्त्तव्य है। आवश्यकता है हमें सचेत होने की और जागरूक रहने की।

8.3 रचना के प्रकार

रचना लेखन पर विस्तार से चर्चा करने से पहले आइए सर्वप्रथम हम रचना के कुछ प्रमुख प्रकारों के विषय में जानकारी प्राप्त करें। इस खंड की इकाई 5, 6 और 7 में इन्हीं प्रकारों एवं इनके लेखन की विशिष्टताओं पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। रचना के अलग-अलग प्रकारों का लेखन अलग-अलग तरीके से ही होता है। उसमें पृथक सोच और विषयवस्तु के व्यवहार की आवश्यकता होती है।

उदाहरण

विषय-1 : साहित्य और समाज
विषय-2 : मेरी लंदन यात्रा

यहाँ उपर्युक्त दोनों विषयों पर एक तरह से नहीं लिखा जा सकता। विषय-1 में साहित्य और समाज के संबंध का सामान्य रूप से वर्णन करना है परन्तु विषय-2 पूरी तरह से व्यक्तिगत है। इसमें अपने व्यक्तिगत अनुभवों को ही अंकित करना है।

कई बार एक ही विषय पर अलग-अलग लेखकों द्वारा लिखी गई रचना में भी अंतर होता है क्योंकि उनकी शैली और उनके विचार, अलग होते है। विषय को देखने और समझने की दृष्टि हर लेखक की पृथक होती है। जैसे हमने उदाहरण के तौर पर जो रचना पढने को दी है 'प्रदूषण : एक समस्या', उसके लेखन का ढंग भी कई तरह से हो सकता है। यहां उसे एक निबंध की तरह लिखा गया है तथा तर्क देकर अपनी बात स्पष्ट की गई है। कुछ लेखक उसे व्यंग्य की तरह भी लिख सकते है।

रचना के तीन प्रमुख प्रकार हैं - वर्णनात्मक लेखन, आख्यानपरक लेखन और तार्किक लेखन। रचना का हर प्रकार एक अलग तरह की भाषा, शैली और विषय से संबद्ध विशिष्ट सामग्री की मांग करता है। जब आप किस विषय को रचना के लिए चुनते हैं तो यह आवश्यक हो जाता है कि आप साथ ही यह भी निर्णय करें कि रचना के किस प्रकार में उस विषय का विस्तार करेंगे या रचना के कौन से प्रकार को उस विषय के लिए चुनेंगे। यह आवश्यक नहीं कि रचना का कोई भी प्रकार पूरी तरह से अपने में विशिष्ट हो। जब आप अपने विषय के लिए रचना के किसी एक विशिष्ट प्रकार को चुनेंगे तो वहीं यह भी देखेंगे कि अपने विषय के विस्तार में आपको रचना के अन्य प्रकारों की तकनीकों की भी सहायता लेनी पड़ी है।

8.3.1 वर्णनात्मक लेखन

यह रचना का एक महत्वपूर्ण प्रकार है। इसमें लेखक किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु या दृश्य का वर्णन करता है। किसी व्यक्ति का वर्णन करते समय यह अपेक्षित होता है कि वह उसकी चाल ढाल, उम्र आदि के साथ-साथ उसके आंतरिक रूप का भी वर्णन करता चले। इसी प्रकार किसी स्थान के वर्णन में उसके वातावरण, वहाँ के लोग, माहौल, वहाँ के विशिष्ट भोजन आदि का भी वर्णन आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार के लेखन के लिए विशिष्ट शब्दावली एवं अभिव्यक्ति का सहारा लेना पड़ता है।

उदाहरण

वर्ष भर का समय बीत जाने पर सोना हरिण - शावक से हरिणी में परिवर्तित होने लगी। उसके शरीर के पीताभ रोएँ ताम्रवर्णी झलक देने लगे। टाँगे अधिक सुडौल और खुरों के कालेपन में चमक आ गई। ग्रीवा अधिक बंकिम और लचीली हो गई। पीठ में भराववाला उतार-चढ़ाव और स्निग्धता दिखाई देने लगी। परंतु सबसे अधिक विशेषता तो उसकी आँखों और दृष्टि में मिलती थी। आँखो के चारों ओर खिंची कज्जलकोर में पीले गोलक और दृष्टि ऐसी लगती थी मानो नीलम के बल्बों में उजली विद्युत का स्फुरण हो।

संभवतः अब उसमें वन तथा स्वजाति का स्मृति संस्कार जगने लगा था। प्रायः सूने मैदान में वह गर्दन ऊँची करके किसी की आहट की प्रतीक्षा में खड़ी रहती। बासंती हवा बहने पर यह मूक प्रतीक्षा और अधिक मार्मिक हो उठती।

सोना - (महादेवी वर्मा)

8.3.2 आरव्यानपरक लेखन

आरव्यानपरक लेखन में लेखक वास्तविकता या कल्पना का सहारा लेते हुए घटनाओं का अंकन करता है। लघुकथाएँ इसी लेखन के अंतर्गत आती है। इसमें लेखक के लिए यह आवश्यक होता है वह घटनाओं का उसी क्रम में वर्णन करे जिस क्रम में वे घटित हुई हैं साथ ही लेखक की अपनी दृष्टि भी उसमें द्रष्टव्य हो।

इस लेखन के उदाहरण के रूप में लघु कथा को लिया जा सकता है।

8.3.3 तार्किक लेखन

तार्किक लेखन का साधारण अर्थ है किसी विषय का वर्णन करना और अपने तर्क से स्पष्ट करना जिसके पाठक लेखक की बात को समझ जाए। यहाँ लेखक अपना उद्देश्य रखता है तथा अपने विचार बिंदुओं और दृष्टि से उसे स्पष्ट करता है।

उदाहरण - **मित्रता (रामचन्द्र शुक्ल)**

जिस पुरुष की दृष्टि सदा नीची रहती है उसका सिर कभी ऊपर न होगा। नीची दृष्टि रखने से यद्यपि रास्ते पर रहेंगे, पर इस बात को न देखेंगे कि रास्ता कहाँ ले जाता है। चित्त की स्वतंत्रता का मतलब चेष्टा की कठोरता या प्रकृति की उग्रता नहीं है। अपने व्यवहार में कोमल रहो और अपने उद्देश्यों को उच्च रखो, इस प्रकार नम्र और उच्चाशय दोनों बनो। अपने मन को कभी मरा हुआ न रखो। जितना ही जो मनुष्य अपना लक्ष्य ऊपर रखता है, उतना ही उसका तीर ऊपर जाता है।

(आत्मनिर्भरता - रामचंद्र शुक्ल)

यहाँ लेखक ने 'जिस पुरुष की दृष्टि सदा नीची रहती है उसका सिर कभी ऊपर न होगा' से अपनी बात कहनी प्रारम्भ की और आगे तर्क से उसे स्पष्ट किया।

8.4 रचना की तैयारी

जैसा कि हमने पहले ही स्पष्ट किया है कि रचना एक सुसंगठित एवं सुनियोजित तरीके से किया गया लेखन है। आइए, अब हम देखें कि किस प्रकार विषय से संबद्ध सामग्री को संगठित करना है। रचना करने से पहले आपको यह जानना आवश्यक है कि आप किसके लिए लेखन करने जा रहे हैं। आपका पाठक कौन होगा जब आपको इस विषय में पूरी जानकारी होगी तभी आप अपने विशिष्ट पाठक वर्ग की आवश्यकताओं और स्तर को ध्यान में रख सकते हैं। यदि आप बच्चों के लिए लेखन करने जा रहे हैं और उसमें कठिन शब्दों का प्रयोग करें और विषय भी राजनीति या अध्यात्म से संबंधित रखें तो वह बच्चों के स्तर के उपयुक्त नहीं होगा और उनके लिए उपयोगी भी नहीं होगा। अपना लेखन प्रारंभ करने से पहले स्वयं से कुछ प्रश्न पूछें -

- लेखन किसके लिए और क्यों ?
- आपका लेखन उन्हें कैसे प्रभावित कर सकता है ?
- पाठक को विषय के संबंध में पहले से कितनी जानकारी होगी ?

साथ ही, आपके पास अपने विषय से संबंधित उपयुक्त जानकारी भी होनी आवश्यक है जिससे आप उस विषय पर अनेक अनुच्छेदों में विस्तार से चर्चा कर सकें तथा पाठक तक अपना मंतव्य प्रेषित कर सकें। आपको अपने विषय के बारे में पूरी स्पष्ट जानकारी भी होनी चाहिए जिससे आप विषय को

परिभाषित कर सकें, उचित उदाहरणों द्वारा उसे स्पष्ट कर सकें और उसे उचित विस्तार दे सकें। उदाहरण के लिए प्रदूषण एक समस्या पर यदि आप लेखन करने जा रहे हैं तो आपको इन बिन्दुओं की जानकारी होना अत्यावश्यक है -

- प्रदूषण क्या है ?
- प्रदूषण हमें कैसे प्रभावित करता है ?
- प्रदूषण के कारण
- प्रदूषण की समस्या पर नियन्त्रण के उपाय

उपर्युक्त सभी बिन्दुओं पर प्रामाणिक जानकारी होने के बाद ही आप एक सफल रचना कर सकते है।

8.4.1 विषय क्या है?

किसी भी रचना का प्रारंभ करने से पहले आपको अपने विषय का चयन करना अत्यावश्यक है। विषय चयन करते समय आपको अपने पाठक वर्ग के बारे में जानना जरूरी है। वह पाठक एक बच्चा हो सकता है, एक पढ़ा लिखा वयस्क हो सकता है, जिस विषय पर आप लेखन करने जा रहे हैं उस क्षेत्र का विद्वान या विशेषज्ञ हो सकता है, एक किसान भी हो सकता है, या घरेलू महिला भी हो सकती है। पाठक वर्ग के साथ-साथ आपको अपने विषय के क्षेत्र की भी पूरी जानकारी होनी आवश्यक है। ऐसा होने पर ही आप अपने विषय के साथ न्याय कर सकेंगे और पूरे आत्मविश्वास के साथ अपने विचार प्रस्तुत कर सकेंगे। आपके विषय चयन के संबंध में हम निम्नलिखित सुझाव दे रहे हैं जिससे कि आपको अपनी रचना के लिए विषय ढूँढने में सहायता मिल सकती है -

1. समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पढने तथा दूरदर्शन के कार्यक्रमों को देखने से भी आपको प्रतिदिन की घटनाओं, समस्याओं आदि की सूचना एवं जानकारी प्राप्त होगी। जो ज्वलंत समस्याएँ एवं घटनाएँ रोजमर्रा के जीवन को प्रभावित करती है तथा समय में बदलाव लाने का कारण बनती हैं वे भी आपकी रचना का एक महत्वपूर्ण विषय हो सकती हैं। पिछले दिनों कारगिल के युद्ध की त्रासदी या आजकल उड़ीसा के तूफान से पीड़ित समाज भी रचना का विषय हो सकता है। आपकी रचना पाठक के हृदय को झकझोर भी सकती है। आपके लेखन की भावात्मकता और यथार्थ चित्रण पाठक को उन दुःखद स्थितियों से तादात्म्य स्थापित करा सकते हैं।
2. अपने मित्रों या सहकर्मियों के साथ चर्चा या बातचीत भी आपके मन में कुछ प्रश्न उत्पन्न कर सकती है। आपको ऐसी चर्चाओं से अलग-अलग दृष्टियों की उपयुक्त जानकारी भी प्राप्त हो सकती है, तथा आप अन्य व्यक्तियों के विचारों एवं दृष्टियों से भी अवगत हो सकते है।
3. कुछ विषय ऐसे होते है जो विशिष्ट पात्रों एवं विषयों जैसे इतिहास, विज्ञान, खेल, साहित्य आदि से संबद्ध होते हैं। ऐसे विशिष्ट विषयों की जानकारी के लिए आपको लाइब्रेरी, म्यूजियम या विविध संस्थानों का भ्रमण करना आवश्यक है जिससे आप उस विषय की स्पष्ट तथा सही जानकारी दे सकें। साथ ही उन व्यक्तियों से मिलना भी चाहिए जो इस क्षेत्र में कार्य करते हों या जिन के लिए आप लेखन करने जा रहे हों। उदाहरण के लिए यदि आप बंधुआ मजदूरों या बाल मजदूरों को अपनी रचना का विषय बनाने वाले हों तो आपके लिए यह आवश्यक होगा कि आप ऐसे कुछ मज़दूरों और बच्चों से मिलें तथा उनकी समस्याओं एवं कष्टों की जानकारी प्राप्त करें।

वस्तुतः रचना के लिए विषय ढूँढने की कोई सीमा नहीं है। आप कहीं से भी किसी भी रूप में रचना का विषय खोज सकते है। यहाँ हम आपको कुछ सुझाव दे रहे हैं जिससे आपको विषय चुनने में सहायता मिल सके। आप जब विषय की खोज करेंगे तो एक ही क्षेत्र में आपको अनेक विषय मिलेंगे परन्तु उनमें से किसे चुनकर आप अपनी रचना करें इस संदर्भ में निम्नलिखित सुझाव आपके लिए सहायक हो सकते हैं -

1. सबसे पहले उसी क्षेत्र का चयन करें जो आपकी पसंद का हो तथा जिस पर आप चिन्तन कर सकते हों। ऐसा होने पर ही आप लेखन के साथ न्याय कर पाएँगे और पाठक भी विषय को समझ कर प्रभावित हो सकेगा।
2. वही विषय चुनें जिस पर आपने गंभीरता से अध्ययन किया हो और आपको उस विषय की पूर्ण जानकारी हो।
3. यदि कोई विषय आपकी पसंद का न हो परन्तु उस पर आप काफी कुछ जानकारी रखते हों तो भी उस विषय पर लेखन न करें क्योंकि आप उस विषय का प्रस्तुतीकरण ठीक से नहीं कर पाएंगे

और पाठक भी उसे अधिक पढना पसंद नहीं करेगा क्योंकि आपकी नापसंदगी उसमें कहीं न कहीं अवश्य झलकेगी। जिस पर आप खुलकर लिख सकते हों तथा पाठक के समक्ष अपनी बात पूरे विश्वास के साथ रख सकते हों, ऐसा विषय ही अपने लेखन के लिए चुनें।

8.4.2 विषय का सीमा निर्धारण

कई बार ऐसा देखा जाता है कि जब कोई छात्र रचना के लिए किसी विषय का चुनाव करता है तो वह अत्यंत सामान्य और विस्तार लिए होता है। उसमें अनुभवों और तथ्यों का एक विस्तृत क्षेत्र होता है जिन्हें आसानी से समेटा नहीं जा सकता। यही कारण है कि ऐसी रचनाओं में एक अनपेक्षित फैलाव आ जाता है। वह किसी विषय विशेष की चर्चा करने की बजाय सामान्य चर्चा करने लगते हैं। उस रचना में अनेक ऐसे सामान्य कथन होते हैं जिनमें सभी कथनों का उदाहरणों या चित्रों द्वारा समर्थन करना असंभव सा प्रतीत होता है। अतः विषय का चयन करने के पश्चात अगला महत्वपूर्ण कार्य है विषय की सीमा का निर्धारण करना जिससे आप अपने कथनों और प्रमुख बिन्दुओं को उदाहरणों द्वारा भली-भाँति समझा सकें। जब आप अपनी रचना के लिए विषय का चयन कर लेते हैं तथा उसकी सीमा निर्धारित कर देते हैं तब आपको अनावश्यक बिन्दुओं एवं सामग्री को रचना से निकालने या हटाने में आसानी रहती है।

उदाहरण के लिए यदि आप 'टेलीविजन' पर रचना करना चाहते हैं तो आपको टेलीविजन के हर पहलू को रचना में समाहित करना होगा। टेलीविजन की बनावट, उसकी मशीनरी, उसके अनेक प्रकार, उसके लाभ, हानि, बढ़ते प्रभाव सभी पर आपको लिखना होगा जिससे आपके लेखन में फैलाव आ जाएगा और आप ठीक से अपनी बात समझा नहीं पाएँगे। लेकिन यदि आप अपने विषय को एक परिधि में बांधने के लिए केवल टेलीविजन की लाभ हानियों पर बात करेंगे तो आप स्पष्ट रूप से उसी पक्ष को लेकर चलेंगे और पाठक को अपना मन्तव्य स्पष्ट कर सकेंगे; क्योंकि तब आपके विषय की सीमा केवल टेलीविजन के लाभ हानि तक ही सीमित होगी।

अतः जब विषय की सीमा निर्धारित होती है तब उसके पहले अनुच्छेद में विषय की संक्षिप्त चर्चा करके उसके प्रमुख बिन्दु को पूरी रचना में आसानी से विस्तार दिया जा सकता है और आपके समक्ष यह भी स्पष्ट रहता है कि विषय के किस-किस पक्ष को कौन-कौन से अनुच्छेदों में विभाजित करना है।

8.4.3 विषय से संबद्ध सामग्री एकत्र करना

जब आप अपने विषय की सीमा निर्धारित करते हैं और अनावश्यक सामग्री को छोड़ते हैं तब आप इस कोशिश में एक नई भाषा शैली का भी निर्माण करते हैं। साथ ही आप पूरे विषय को इस प्रकार नियोजित करते हैं कि वह आपके मंतव्य के निकट आता जाता है। आप जो पाठक को संप्रेषित करना चाहते हैं वह स्पष्ट होता चला जाता है। ऐसा करते हुए आप अपनी सूचनाओं एवं तथ्यों को विविध स्थानों से एकत्र कर उन्हें सुनियोजित करते हैं। जब आप अपने विषय का सीमा निर्धारण करते हैं तो उस समय आपके समक्ष यह स्पष्ट हो जाता है कि आपको कौन-कौन सी रचनाएँ तथा तथ्य इस रचना में समाहित करने हैं। उनका किस प्रकार नियोजन करना है।

खंड 8.4.1 में हमने आपको विषय तथा उससे संबद्ध सूचना एकत्र करने के कुछ स्रोतों के सुझाव दिए थे। इन सुझावों के अतिरिक्त आपको अपनी समझ, चिन्तन और विचारों का अधिकाधिक उपयोग भी करना चाहिए। सूचनाएँ एकत्र करके उसमें नवीन दृष्टि का भी समावेश करना चाहिए। ऐसा करने से आपकी रचना विशिष्ट और नवीन होगी। आपकी दृष्टि आपकी रचना को दूसरी रचनाओं से अलग और विशिष्ट बनाएगी। तभी वह लेखन प्रभावी भी होगा।

इसके लिए आवश्यक है कि सबसे पहले तथ्यों को सुनियोजित किया जाए। जब आप सभी सूचनाओं एवं तथ्यों को सही ढंग से नियोजित कर लेंगे तो देखेंगे कि जो सूचनाएँ, तथ्य, चित्र, विचार, दूसरों की राय आदि आपने अपने मस्तिष्क या कागज़ पर एकत्र किए हैं उन्हें लेखन करने से पहले किसी विशेष क्रम में लाना आवश्यक है। ऐसा इसीलिए आवश्यक है क्योंकि -

- वे विचार और तथ्य जो आपने एकत्र किए हैं, आवश्यक नहीं कि सभी आपके विषय से सीधे संबद्ध हों। उनमें से कुछ अनावश्यक भी हो सकते हैं जिन्हें आप को छोड़ना होगा।
- कुछ ऐसे भी बिन्दु हो सकते हैं जिनके बारे में लिखना आवश्यक नहीं है,
- कुछ ऐसी भी सूचनाएँ हो सकती हैं जिनके बारे में पहले भी बहुत बार चर्चा की जा चुकी है और उनका लेखन अनावश्यक ही हो।

- आपको ऐसा भी प्रतीत हो कि जो सूचनाएँ एवं तथ्य आपने एकत्र किए हैं वे पर्याप्त न हों तथा उनके आधार पर एक अच्छी रचना की ही न जा सके क्योंकि तथ्य और सूचनाएँ ही एक रचना को प्रभावशाली बनाते हैं। अतः आपको और भी अधिक जानकारियों एवं तथ्यों की आवश्यकता पड़ सकती है।
- कुछ ऐसे चिन्तन या विचार हो सकते हैं जिसके बारे में आपकी राय कुछ अलग हो और आप अपनी दृष्टि भी उसमें समाहित करना चाहें।

अब तक जो भी सूचनाएँ एवं तथ्य आपने एकत्र कर लिए है उन्हें विषय के अलग-अलग खंडों में बाँटना आवश्यक है। जो भी सूचनाएँ विषय के जिस खंड से संबंद्ध है उन्हें उन खंडों में विभाजित कर लीजिए। हम कुछ निर्देशों द्वारा बताने जा रहे हैं कि आप एकत्र की गई सूचनाओं एवं तथ्यों को किस प्रकार विविध भागों या खंडों में विभाजित करें। हमें आशा है कि निम्नलिखित बिन्दु आपकी सूचनाओं के लिए एक खाका बनाने में अवश्य सहायता करेंगे जो किसी भी रचना से पहले की तैयारी का अत्यंत आवश्यक पक्ष है।

1. सबसे पहले आपने अपना जो विषय चुना है उसके शीर्षक में से उन शब्दों को रेखांकित करें जिन पर आपको रचना में चर्चा करनी है। उदाहरण के लिए आपने अपनी रचना का शीर्षक चुना - '**छात्रों में बढ़ता कम्प्यूटर का प्रभाव**'। यहाँ आप अपने विषय में कम्प्यूटर के प्रभाव की बात करना चाहते हैं और वह भी विशेषकर छात्रों के संदर्भ में। कई बार विद्यार्थी अपने शीर्षक में दिए गए उन विशेष शब्दों को छोड़ देते हैं जिन पर उनकी रचना निर्भर है । इस तरह उनकी रचना मुख्य धुरी या विषय से भटक जाती है।
2. अपनी रचना के शीर्षक पर ध्यान केन्द्रित करें तथा अपने मन में उठने वाले उसके मुख्य बिन्दुओं तथा विचारों को कागज़ पर लिखते चले जाएँ। कई बार रचना करते समय विचार छूट जाते हैं। अतः जब भी कोई विचार उस शीर्षक से संबंद्ध हो उसे तुरन्त लिख ले जिससे कि बाद में रचना करते समय आसानी रहे ।
3. वे सारे विचार, तथ्य और सुझाव जो एक दूसरे से मिलते जुलते हों उन्हें एक ही खंड में रखें और बाद में उन्हें सही क्रम से नियोजित कर लें।
4. जब सारे विचार और तथ्य अलग अलग खंडों में विभाजित हो जाएँ तो उस समय यह ध्यान देना आवश्यक है कि उन खंडों को भी इस तरह क्रम में व्यवस्थित किया जाए कि वे एक दूसरे से संबद्ध भी हों। इस व्यवस्था के लिए आवश्यक है कि
   - वे कालक्रमानुसार विभाजित हों,
   - कारण और प्रभाव पर आधारित हों,
   - विषय के लिए एकत्र की गई सामग्री के महत्व के अनुसार ही उन्हें नियोजित किया जाए। उदाहरण के लिए यदि **प्रदूषण - एक समस्या** शीर्षक है तो विषय के अंतर्गत पहले प्रदूषण पर चर्चा करें, फिर कारण पर, और अंत में निदान पर।

अब तक आप अपनी रचना के शीर्षक को भली प्रकार समझकर उससे सबद्ध सामग्री एकत्र कर चुके होंगे तथा उसका उचित रूप से खंडों में विभाजन भी कर चुके होंगे। आपको यह भी पता चल गया होगा कि कहाँ से आप अपनी रचना प्रारंभ करेंगे और किस खंड पर उसका समापन करेंगे। अब तक शायद आपने पहला वाक्य लिख भी लिया होगा। लेकिन अभी आप अपनी रचना का प्रारंभ न करें। अभी तो आपको अपने विषय की रूपरेखा भी बनानी है तभी आप पूरी तरह से रचना का लेखन करने के लिए तैयार हो सकेंगे।

रूपरेखा तैयार करने से पहले आइए एक बार फिर एक उदाहरण द्वारा अपने एकत्रित विचारों, तथ्यों एवं सूचनाओं को खंडों में विभाजित करना समझ लें।

उदाहरण : हमने जो नमूने के तौर पर आपको खंड 2.2 में रचना दी है - 'प्रदूषण-एक समस्या,' आइए उसके मुख्य विचारों को खंडों में विभाजित करते हैं :

खंड 1 प्रदूषण

1. प्रदूषण क्या है
2. प्रदूषण का प्रभाव
3. वायु प्रदूषण

खंड 2 प्रदूषण के कारण

1. औद्योगीकरण
2. आणविक परीक्षण
3. ध्वनि प्रदूषण
4. वृक्षों की कटाई

खंड 3 प्रदूषण का समाधान

1. उद्योगों में
2. प्राकृतिक संतुलन में

आपने देखा कि यहाँ एक खंड से दूसरे खंड में विचारों का एक सरल प्रवाह है। कहीं भी उनका क्रम टूटा नहीं है। एक बिंदु दूसरे बिंदु से जुड़ा है और विषय को बढ़ाने में सहायक है। अब आप जान चुके होंगे कि विचारों तथा तथ्यों को समूहों में बाँटने से हमें उन्हें एक दूसरे से संबद्ध करने में भी आसानी रहती हैं। हाँ, यह आवश्यक नहीं कि आप प्रत्येक विचार या तथ्य को एक अलग अनुच्छेद में रखें। उन्हें एक बड़े अनुच्छेद के अंतर्गत भी रखा जा सकता है।

8.4.4 विषय की रूपरेखा बनाना

अभी तक आपने अपनी रचना के शीर्षक का चुनाव कर लिया, विषय से संबद्ध सामग्री एकत्र कर ली है और उन्हें विषय के अनुसार विविध खंडों में विभाजित भी कर लिया है। अब लेखन से पहले के अंतिम चरण अर्थात् विषय की रूपरेखा बनाना, आपके लिए बाकी है।

किसी भी विषय पर रचना करने के लिए उसकी रूपरेखा बनाने से समय की बचत भी होती है तथा आप विषय से इतर भटकने से बच जाते हैं। जिन बिन्दुओं को आपको अपनी रचना में समाहित करना है उन्हें रूपरेखा में इंगित कर देने से रचना करते समय आप अपने मंतव्य को स्पष्ट करने में पूर्ण सफल होते हैं। आपको पता रहता है कि रचना को कितने अनुच्छेदों में बांटना है और कौन कौन से क्षेत्रों को उन अनुच्छेदों में समेटना है।

यदि आप अपने विषय की स्पष्ट और सटीक रूपरेखा तैयार करेंगे तो आपको अपनी रचना को बार-बार पढ़कर उसके बिन्दुओं को बदलने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। साथ ही आप शीर्षक में उठाए गए मुख्य बिन्दुओं से भटकेंगे नहीं और अपने विषय को सही दिशा दे सकेंगे। यदि आपने अच्छी रूपरेखा तैयार की है तो आप अपने विचारों एवं सूचनाओं को दोहराने से भी बच जाएँगे क्योंकि आपको रचना में अपने विषय से संबंधित अनेक सूचनाएँ एवं तथ्य पाठक को बताने हैं न कि एक सूचना या तथ्य का बार-बार दोहराव करना है। यदि रचना जटिल हो तो उसके लिए रूपरेखा बनाना अत्यावश्यक है क्योंकि इससे आपको भी स्पष्ट हो जाएगा कि जिस विषय पर आप चर्चा करना चाहते हैं उसके मुख्य बिंदु कौन कौन से होने चाहिए और उन्हें कहाँ से प्रारंभ करना है, उनका विस्तार कैसे करना है और उनका समापन कैसे करना है।

बोध प्रश्न - 1

1. रचना के प्रमुख प्रकार कौन-कौन से हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. किसी भी रचना के लिए विषय का चयन करते समय किन बातों को जानना आवश्यक है ?

.....

.....

.....

.....

.....

3. रचना का विषय चयन करने के लिए कहां-कहां से सहायता ली जा सकती हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

4. हाँ या ना में उत्तर दीजिए :

(क) विषय की सीमा का निर्धारण उसमें अनावश्यक फैलाव को बचाता है। ( )

(ख) विषय की रूपरेखा बनाने से समय की बचत होती है तथा विचारों एवं सूचनाओं का दोहराव नहीं होता। ( )

(ग) सारे विचार, तथ्य एवं सूचनाएँ और सुझाव, जो एक दूसरे से मिलते-जुलते हों उन्हें एक ही खंड में लिखना चाहिए। ( )

(घ) कुछ ऐसी सूचनाएँ जिनके बारे में अन्यत्र चर्चा की जा चुकी हो, का लेखन भी आवश्यक है। ( )

8.5 रचना करते समय ध्यान देने योग्य बातें

रचना प्रभावी तभी हो सकती है जब उसकी तैयारी पूरी सावधानी से और उसका संगठन सुनियोजित तरीके से किया गया हो। उसका शीर्षक पूरी रचना के विषय को स्पष्ट रूप से व्यक्त करता हो और रचनाकार अपने मंतव्य में सफल हुआ हो। एक रचना में लेखक द्वारा किया गया अनुच्छेदों का बँटवारा भी रचना को प्रभावी बनाता है। रचना में अनुच्छेदों का क्या महत्व होता है इस विषय पर हम निम्न-लिखित बिन्दुओं में चर्चा करेंगे जो आपके लेखन के लिए सहायक हो सकते हैं -

- रचना के प्रत्येक अनुच्छेद से एक नया विचार प्रकट होता है जो शीर्षक से पूरी तरह संबद्ध होता है और विषय के विस्तार में सहायक होता है।
- एक अनुच्छेद उतना ही बड़ा हो जितने में उस रचना के शीर्षक से संबद्ध किसी तथ्य, सूचना या चिन्तन की चर्चा की गई हो। जहाँ कहीं भी दूसरी सूचना या तथ्य का प्रारंभ हो या विषय से संबद्ध किसी नवीन चिन्तन की चर्चा करनी हो वहीं से दूसरा अनुच्छेद प्रारंभ कर देना चाहिए।
- यह भी ध्यान रखें कि रचना के सभी अनुच्छेदों की लंबाई लगभग एक जैसी ही हो या थोड़ा बहुत ही अंतर हो। यदि बड़े-बड़े अनुच्छेद होंगे तो वे पाठक को विषय से भटका भी सकते हैं। यदि कोई चर्चा करते समय अनुच्छेद बड़ा हो जाए तो उसे बीच में छोडकर उसी विषय पर अलग अनुच्छेद प्रारंभ कर दें। हाँ, यह ध्यान रखें कि किसी भी विषय को बीच में अधूरा न छोड़ें।
- जैसा कि हमने पहले भी संकेत किया है कि प्रत्येक अनुच्छेद के बीच में एक सूत्र अवश्य हो। ऐसा न हो कि आपने एक अनुच्छेद समाप्त किया और नया अनुच्छेद बिल्कुल ही नयी सूचना से प्रारंभ कर दिया दोनों अनुच्छेदों को सूत्र वाक्य से जोड़कर ही नया तथ्य या सूचना सामने रखें।

आइए अब देखें कि इस पूरी तैयारी के बाद रचना करते समय और कौन कौन सी बातें हैं जिन्हें ध्यान देना आवश्यक है। किसी भी रचना का लेखन करते समय मुख्यतः तीन बातों का ध्यान देना आवश्यक है - प्रारंभ, विस्तार एवं अंत या निष्कर्ष। हाँ, एक बात और ! किसी भी रचना का प्रारंभ करने से पहले उसके शीर्षक का चुनाव अत्यंत सावधानी से करना चाहिए। शीर्षक छोटा, विषय के बारे में जानकारी देने वाला और स्पष्ट होना चाहिए, जिससे कि पाठक को शीर्षक के माध्यम से ही रचना के मुख्य विषय की जानकारी मिल सके। शीर्षक ऐसा हो कि जिसे पढकर पाठक के मन में उस विषय को जानने की जिज्ञासा और रचना को पढ़ने की लालसा पैदा हो सके।

8.5.1 रचना का प्रारंभ

किसी भी रचना का प्रारंभ प्रस्तावना से किया जाता है। यह रचना में निहित मुख्य विषय का परिचय देता है। एक तरह से प्रस्तावना भूमिका का कार्य करती है। किसी भी रचना की भूमिका या प्रारंभ आवश्यक नहीं कि एक ही अनुच्छेद तक सीमित हो। यह एक दो पंक्तियों का भी हो सकता है और एक दो अनुच्छेदों का भी। वस्तुतः प्रस्तावना या भूमिका की लंबाई उस रचना या विषय की लंबाई पर निर्भर करती है। कई बार विषय को किसी भूमिका की आवश्यकता नहीं होती। उसे बिना किसी प्रारंभिक अनुच्छेद या पंक्ति के सीधे ही प्रारंभ कर सकते है। आइए अब हम रचना की प्रस्तावना या भूमिका या उसके पहले अनुच्छेद की चर्चा करें जो पाठक को विषय से परिचित कराता है।

वस्तुतः रचना का प्रथम अनुच्छेद विषय की भूमिका या प्रस्तावना का कार्य करता है अतः यह आवश्यक है कि उसमें विषय के मुख्य विचार का अंकन हो तथा पाठक को यह जानकारी प्राप्त हो सके कि लेखक इस रचना में विषय के किस पक्ष पर चर्चा करने जा रहा है। ऐसा अनेक प्रकार से किया जा सकता है। इसमें विचारों का वर्णन हो सकता है, तर्क हो सकते हैं या विवरण हो सकता है। उदाहरण -

> **वातावरण एवं वायुमंडल का दूषित होना प्रदूषण कहलाता है। प्रदूषण की समस्या संपूर्ण विश्व में बड़ी ही तीव्रता से अपना प्रभाव जमाती जा रही है। आज समस्त मानव जाति इस समस्या से आतंकित है और विश्व के प्रत्येक देश अपने-अपने ढंग से इस समस्या के सम्यक् समाधान में संलग्न हैं। प्रदूषण एक ऐसी विकट समस्या है जिसका समाधान नहीं हो पा रहा है। वैज्ञानिकों का मत है कि समय रहते यदि तत्काल फैल रहे इस प्रदूषण को सही ढंग से नियंत्रित नहीं किया गया तो आगामी दशकों में संपूर्ण धरती किसी भी जीवधारी के रहने योग्य नहीं रहेगी।**

इस भूमिका से न केवल रचना का मूल विषय स्पष्ट हो गया है बल्कि लेखक के मंतव्य की पूरी जानकारी प्राप्त हो गई है। यह भी पता चल गया है कि लेखक रचना में **प्रदूषण की समस्या और समाधान** पर विचार प्रकट करने वाला है।

8.5.2 विषय का विस्तार

अब तक आपने पहले अनुच्छेद में विषय की जानकारी दी, उसकी सीमा निर्धारित की और पाठक के मन में विषय के प्रति जिज्ञासा को बढ़ाया। उसके मन में उस रचना को पढ़ने की इच्छा जाग्रत की। अब आपको रचना में अपने विषय का विस्तार करना है और ऐसी भाषा शैली का प्रयोग करना है जो आपके विचारों एवं मंतव्य को स्पष्ट रूप से प्रकट कर सके। ऐसा सब होने के बाद ही पाठक रचना में निहित विषय से संबद्ध विचारों एवं चिंतन को समझ सकेगा और विषय के बारे में आपकी सोच से परिचित हो सकेगा।

किसी भी रचना में विषय के विस्तार के लिए उदाहरणों का, विस्तृत वर्णन का तथा परिभाषाओं आदि का प्रयोग किया जाता है। किसी भी विषय के विस्तार करने का सबसे आसान तरीका उदाहरणों द्वारा अपनी बात की पुष्टि करना है। जब कोई लेखक अपनी रचना में उदाहरणों का प्रयोग करता है तब वह कठिन से कठिन विषय के प्रति पाठक में रुचि भी पैदा करता है। उदाहरण -

> **संसार में ऐसे-ऐसे दृढ़ चित्त मनुष्य हो गए हैं जिन्होंने मरते दम तक सत्य की टेक नहीं छोड़ी, अपनी आत्मा के विरुद्ध कोई काम नहीं किया। राजा हरिश्चंद्र के ऊपर इतनी-इतनी विपत्तियाँ आई', पर उन्होंने अपना सत्य नहीं छोड़ा। उनकी प्रतिज्ञा यही थी -**
>
> **चंद्र टरें, सूरज टरें, टरें जगत् व्यवहार।**
> **पै दृढ़ श्री हरिश्चंद्र को, टरें न सत्य विचार।।**
>
> **महाराणा प्रतापसिंह जंगल-जंगल मारे-मारे फिरते थे, अपनी स्त्री और बच्चों को भूख से तड़पते देखते थे, परंतु उन्होंने उन लोगों की बात न मानी जिन्होंने उन्हें अधीनतापूर्वक जीते रहने की सम्मति दी, क्योंकि वे जानते थे कि अपनी मर्यादा जितनी अपने को हो सकती है, उतनी दूसरे को नहीं।**
>
> **(आत्मनिर्भरता, रामचंद्र शुक्ल)**

यहाँ लेखक ने अपनी रचना में दृढ़ चित मनुष्यों की बात की जिन्होंने सत्य को नहीं छोड़ा और आत्मा के विरुद्ध कार्य नहीं किया और अपनी बात को दो उदाहरणों, राजा हरिश्चंद्र एवं महाराणा प्रतापसिंह के माध्यम से आगे बढ़ाया।

रचना में विस्तृत वर्णन के द्वारा भी विषय का विस्तार करने में सहायता मिलती है। आप व्यक्ति, स्थान, वस्तु, आदतों या किसी भी परिस्थिति का वर्णन कर सकते हैं। यदि किसी दुर्घटना के विषय में लिखना है तो उसका पूरा वर्णन करना अपेक्षित होता है। वर्णन करने में उस स्थिति या व्यक्ति, स्थान आदि की पूरी ठीक-ठीक जानकारी अपेक्षित होती है। उदाहरण :

पड़ती हुई बर्फ का दृश्य बड़ा मोहक होता है। जो बादल हरिद्वार और दिल्ली में पानी की बूँदें बरसाते हैं, वे ही बहुत ठंड पड़ने पर डेढ़ - दो हजार मीटर ऊपर की जगहों में बर्फ बनकर गिरने लगते हैं। मसूरी में भी आकाश का तापमान जब तक शून्य डिग्री (सें.) से नीचे नहीं होता, बादल जलवृष्टि के ही रूप में उतरता है। आकाश का तापमान यदि हिमबिन्दु से नीचे हो, लेकिन पृथ्वी का तापमान उतना नीचा न हो तो बर्फ के छोटे-छोटे कण पृथ्वी पर पहुँचते ही विलीन होकर जल बन जाते हैं। मसूरी में जलवृष्टि के निम्न तापमान में बजरी (नरम छोटे-छोटे ओलों) का रूप लेती है; और भी अधिक शीतलता होने पर हिम रूई के फाहों का रूप लेती है। हल्की-सी हवा चल रही हो तो ये फाहे हवा में तैरते हुए तिरछे चलकर पृथ्वी पर उतरते हैं। हिमकणों या फाहों के गिरने से पृथ्वी ढकने लगती है। यदि चाँदनी रात में हिम वृष्टि हो रही हो तो दृश्य और भी सुंदर होता है। चाँदनी में हिमकणों या फाहों का स्वरूप और रंग निखर आता है।

(हिमपात, राहुल सांकृत्यायन)

यहाँ लेखक ने मसूरी में पड़ने वाली बर्फ के विषय में जानकारी दी है और ताजी पड़ने वाली बर्फ के सौन्दर्य का वर्णन किया है जो हमारी जानकारी बढ़ाता है।

8.5.3 रचना का अंत

अब तक आपने अपने विषय का पूरा विस्तार अपनी रचना में कर लिया है। जो आपका मंतव्य था उसकी आप पूरे विस्तार के साथ चर्चा कर चुके हैं। अब आप अपनी रचना को समाप्त करना चाहते हैं। लेकिन किसी भी रचना का समापन या अंत अचानक नहीं किया जा सकता। रचना का अंत करने से पहले निष्कर्ष या सारांश का अनुच्छेद लिखना आवश्यक है, क्योंकि किसी भी प्रभावी रचना के लिए पहला और अंतिम अनुच्छेद बहुत महत्वपूर्ण होता है। प्रथम अनुच्छेद विषय को प्रारंभ करता है और अंतिम अनुच्छेद निष्कर्ष देता है। कुछ बिन्दु या पक्ष ऐसे होते हैं जिन्हें आप समझते हैं कि आप के पाठक को याद रहे। इन पक्षों या बिन्दुओं को आप अंतिम अनुच्छेद में अंकित कर सकते हैं। इस अनुच्छेद में आप कुछ विचारों, तथ्यों, सूचनाओं, सुझावों, राय, निर्णय, आदि का समावेश कर सकते हैं।

रचना का प्रारंभ जहाँ पाठक को विषय के प्रति जानकारी देता है और उसकी जिज्ञासा बढ़ाता है वहीं रचना का अंत सभी मुख्य विचारों और सूचनाओं का संक्षेपण होता है।

किसी भी वर्णनात्मक आख्यानपरक रचना में अंत किसी भी वर्णन या आख्यान के बाद स्वयं ही आ जाता है। जैसे यदि हिमपात होने का वर्णन कर रहे हैं तो जब हिमपात हो चुका हो तो वहाँ आपकी रचना को भी अंत हो जाएगा। उसी प्रकार यदि कोई कहानी लिख रहे हैं तो उसका अपना एक विशेष अंत होगा उसमें आपको अपनी तरफ से सारांश या निष्कर्ष बताने की आवश्यकता नहीं होगी। उदाहरण

कुम्हार को लगा कि इन लोगों का कहना भी ठीक है। वह गधे की पीठ से उतरा। बेटे को भी उतार दिया। इसके बाद उसने थोड़ी सी रूई जेब से निकाली। दोनों कानों में रूई ठूँस ली। उसके बाद गधे को अपने कंधे पर उठाकर चलने लगा। रास्ते में जो मिलता हँसता। कुम्हार को कुछ भी सुनाई नहीं देता था। वह मन ही मन कह रहा था, "सब ठीक कहते हैं। सबकी सलाह अच्छी है। पर मैं वही करूँगा जो मुझे अच्छा लगे। लोगों को क्या वे तो कुछ न कुछ कहेंगे।"

यह तो आख्यानक रचना का उदाहरण है अतः इसका निष्कर्ष बताने की आवश्यकता नहीं परन्तु यदि आप तार्किक या वर्णनात्मक लेखन कर रहे हैं तो रचना के अंत में अपने सुझाव या राय भी दी जा सकती है जो पाठक के मन में नयी संभावनाओं को जगा सके और वह एक निर्णय पर पहुँच सके। उदाहरण :

जहाँ तक संभव हो सके प्रदूषण की विकट समस्या पर शीघ्र ही काबू पाना है। इसमें किसी भी प्रकार की देर हमारी विकसित और विकासशील सभ्यता एवं संस्कृति के लिए घातक हो सकती है। प्रदूषण के विनाश से बचने के लिए सावधानी हो सकती है, जितने संभव उपाय हो सकते है, उनका पालन मानव मात्र का प्रथम कर्त्तव्य है। आवश्यकता है हमें सचेत होने की, जागरूक होने की।

अपनी रचना के अंत में कुछ शब्दों या वाक्यों का प्रयोग करने से बचे जैसे - सारांश में, अच्छा अब मैं यह कहते हुए अंत करता/करती हूँ, अंत में कहती/ कहता हूँ कि आदि।

रचना के अंतिम अनुच्छेद में किसी भी नवीन विषय को शामिल न करें। रचना का अंत वही होना चाहिए जो आपके उन विचारों को दृढ़ करे जिन्हें आपने अपनी रचना में प्रस्तुत किया है।

बोध प्रश्न 2

1. किसी भी रचना में प्रस्तावना का क्या महत्व है ?

.....

.....

.....

.....

2. रचना में विषय का विस्तार किन-किन तरीकों से किया जा सकता है ?

.....

.....

.....

.....

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त शब्दों द्वारा कीजिए।
   (क) रचना का प्रारंभ पाठक की विषय के प्रति.....बढ़ाता है।
   (ख) किसी भी प्रभावी रचना के लिए.....और.....अनुच्छेद बहुत महत्वपूर्ण होता है।
   (ग) रचना में.....का प्रयोग कठिन से कठिन विषय को आसान बना देता है।
   (घ) किसी भी व्यक्ति रचना दृश्यादि का वर्णन करने के लिए उसकी पूरी..... अपेक्षित है।
4. किसी भी रचना के शीर्षक में कौन से गुण होने चाहिए ?

.....

.....

.....

.....

8.6 सारांश

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जान गए होंगे कि :

- रचना के कितने प्रकार होते हैं तथा उनमें क्या अन्तर हैं,
- किसी भी रचना का लेखन करने से लिखने से पहले उसके विषय का चयन करना उसी क्षेत्र में करना चाहिए जिस विषय क्षेत्र में आपको अच्छी और यथेष्ट जानकारी हो।
- रचना में विषय का विस्तार करने के लिए उदाहरणों एवं परिभाषाओं आदि की सहायता ली जा सकती हैं।
- अपने पाठक वर्ग की जानकारी होनी अपेक्षित है तभी आप उसकी आवश्यकता को समझ सकते हैं और उसके अनुसार अपनी रचना को सही दिशा दे सकते हैं,
- विषय को इस प्रकार अनुच्छेदों में विभाजित करे कि रचना के सभी अनुच्छेदों की लंबाई लगभग एक जैसी ही हो।

- रचना का अंत निष्कर्ष या सारांश से करना चाहिए तथा उसमें विचारों, तथ्यों सूचनाओं, सुझावों, निर्णय आदि का यथोचित समावेश किया जा सकता है।

8.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1. रचना के प्रमुख तीन प्रकार हैं - वर्णनात्मक लेखन, आख्यानपरक लेखन और तार्किक लेखन। वर्णनात्मक लेखन में किसी स्थान, व्यक्ति, वस्तु, दृश्य आदि का वर्णन किया जाता है, आख्यानपरक लेखन में वास्तविकता या कल्पना का सहारा लेते हुए घटनाओं का आकलन होता है और तार्किक लेखन में विषय के प्रमुख बिन्दुओं को तर्क द्वारा स्पष्ट किया जाता है।
2. किसी भी रचना के लिए विषय का चयन करते समय अपने विषय के क्षेत्र की पूरी जानकारी होनी आवश्यक है। यह पता होना चाहिए कि हम जिनके के लिए लेखन करमे जा रहे है वह पाठक वर्ग कौन सा है।
3. देखिए 8.4.1
4. (क) हाँ (ख) हाँ (ग) हाँ (घ) नहीं

बोध प्रश्न - 2

1. प्रस्तावना वस्तुतः रचना के मुख्य विषय का परिचय देती है। एक तरह से उसकी भूमिका कार्य करती है। यह एक या दो पंक्तियों की भी हो सकती है और एक अनुच्छेद की भी।
2. किसी भी रचना में विषय का विस्तार निम्नलिखित तरीकों से किया जा सकता है -
   - उदाहरणों द्वारा
   - विस्तृत वर्णनों द्वारा
   - परिभाषाओं द्वारा
3. (क) जिज्ञासा (ख) पहला, अंतिम (ग) उदाहरणों (घ) जानकारी
4. रचना का शीर्षक छोटा और विषय को स्पष्ट करने वाला होना चाहिए। शीर्षक में स्पष्टता हो जो पाठक के मन में विषय को पढ़ने की जिज्ञासा भी उत्पन्न करने वाला हो।